सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार **(October 2022). Exploration of Buddhist Philosophy Education in Advancement of Education in India**
***International Journal of Economic Perspectives*,*16*(10),75-81**
**Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal**

# भारत की शिक्षा की उन्नति में बौद्ध दर्शन शिक्षा का अन्वेशण

**सरिता कुमारी* डा0 संजीव कुमार****

शोध सार

*भारत में बौद्ध दर्शन के उदयकाल में भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव फैला हुआ था। यह भेदभाव मनुष्य के व्यवसाय और जन्म–वंश के अनुसार था। समाज चार वर्णों में अधोगामी रूप से विभक्त था, जिनमें ब्राह्मण वर्ण श्रेष्ठ माना जाता था। उन्हें धार्मिक प्रशिक्षण और शिक्षा के अधिकार प्राप्त थे। लेकिन अन्य वर्ग के लोग अपने धार्मिक और शैक्षिक अधिकारों के लिए सीमित अधिकार रखते थे अथवा पूर्ण रूप से वंचित थे। अपने उदय के आरंभिक काल में बौद्ध शिक्षा मठों के भीतर और केवल मठ के सदस्यों के लिए सीमित थी। लेकिन बाद में इसे जनता के लिए खोल दिया गया, यहां तक कि आम लोगों को भी उन संस्थानों में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। आधुनिक दिनों में बौद्ध शिक्षा व्यापक रूप से खुली और जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों ने उसे मान्यता प्रदान की। बौद्ध दर्शन के शैक्षिक विचारों के समाज में फैलने के साथ–साथ भारतीय समाज में शिक्षा के प्रति जन साधारण का दृष्टिकोण भी परिवर्तित होने लगा तथा प्रत्येक वर्ण के लोगों को शिक्षा के समान अवसर की प्राप्ति भी होने लगी। यह शैक्षिक परिवर्तन भारत की शिक्षा की उन्नति के लिए मील का पत्थर सिद्ध हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने बौद्ध दर्शन की शिक्षा के इसी प्रभाव का अन्वेषण किया है जोकि आज की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिलक्षित होता है।*

**मुख्य शब्दः जातिगत भेदभाव, अधोगामी, शिक्षा के समान अवसर, प्रारंभिक काल**

मानव जीवन "पवित्रता का जीवन" है जिसके लिए बौद्धदर्शन की शिक्षाएँ जीवन के दर्शन, जीवन और मृत्यु के रहस्यों और ऐसे परम सत्य से संबंधित अटकलों पर अधिक जोर देता है। बौद्ध शिक्षा की पूरी प्रणाली आस्था (साध) में निहित है– त्रिरत्न में विश्वास, और सर्वोच्च स्थान पर बुद्ध जो पूर्ण रूप से प्रबुद्ध, अद्वितीय शिक्षक और सही जीवन और सही समझ के लिए सर्वोच्च मार्गदर्शक के रूप में विराजमान हैं। बुद्ध दर्शन के विश्वास के आधार पर, छात्रों को पांच उपदेशों द्वारा बताए गए नैतिक दिशा–निर्देशों का पालन करके पुण्य (शिला) में निपुण होने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। छात्रों को उन सकारात्मक गुणों की सराहना करनी चाहिए जो इन उपदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैंः दया, ईमानदारी, पवित्रता, सच्चाई और मानसिक संयम। उन्हें उदारता और आत्म–बलिदान (कागा) की भावना भी प्राप्त करनी चाहिए, जो स्वार्थ, लोभ पर नियन्त्रण पाने और आत्म–उन्नति पर संकीर्ण ध्यान केंद्रित करने के लिए आवश्यक है जो वर्तमान समाज में अत्यधिक प्रभावी रूप से प्रचलित है।

बुद्ध के समय, शिक्षा प्रणाली को मुख्य रूप से धार्मिक माना जाता था, यद्यपि शिक्षा की यह अवधारणा बौद्ध–पूर्व काल से थी। बुद्ध का मुख्य उद्देश्य दुनिया के लिए एक शिक्षा प्रणाली का परिचय देना नहीं था; यद्यपि, बुद्ध वास्तव में एक धार्मिक शिक्षक थे जिन्होंने संपूर्ण मानव समुदाय के लिए एक व्यावहारिक और जीवित दर्शन का परिचय दिया। चूँकि बुद्ध एक ऐसे व्यक्ति थे जो वास्तविकता को एक प्रबुद्ध व्यक्ति के रूप में पूरी तरह से समझते थे, उन्होंने विभिन्न शिक्षण विधियों के माध्यम से संपूर्ण मानव को लक्षित करने वाले एक जीवित दर्शन की शुरुवात की।

बौद्ध दर्शन में शिक्षा को सिद्धांत के रूप में वृहद स्तर पर स्वीकार किया गया है। बौद्ध धर्म अष्टांगिक मार्ग पर जोर देता है कि इच्छा और प्रयास, उत्साह और साहस आवश्यक कारक हैं। बौद्ध दर्शन की शिक्षाओं में एक व्यक्ति की शिक्षा क्षमता और संभावित ऊर्जा को आवश्यक घटकों के रूप में सम्मिलित किया गया है। बौद्ध दर्शन के अनुसार, व्यक्तित्व को एकमात्र शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जो एक व्यक्ति के पास इच्छा और आत्मविश्वास के साथ कार्य करने के लिए होता है। बौद्ध दर्शन पहले व्यक्ति को शरीर, वाणी आदि अंगों को अनुशासित करके अच्छे आचरण की शिक्षा देता है, फिर उसके आध्यात्मिक विकास की सलाह देता है। जो अरिहंत हो गया उसका व्यक्तित्व उन सभी

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार

*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*

व्यक्तियों के व्यक्तित्व से अधिक प्रभावशाली होता है। बौद्ध शिक्षा का संपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना है। जब इसकी तुलना आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों से की जाती है, तो बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य व्यापक और अधिक गहरा प्रतीत होता है। यदि छात्रों के साथ व्यक्तित्व के लक्षण देखे जाएं तो इसे महान माना जा सकता है। यह स्पष्ट है कि एक छात्र को व्यक्तित्व विकसित करने के लिए सभी आवश्यक सुझाव बौद्ध दर्शन की शिक्षाओं द्वारा दिये जाते हैं।

बौद्ध दर्शन की शिक्षा संपूर्ण शारीरिक और मानसिक अनुशासन के माध्यम से सभी मानसिक रोगों जैसे वासना, दोष और अज्ञान को समाप्त करने की एक प्रभावशाली विधि है और आध्यात्मिक शुद्धता प्राप्त करने का एक तरीका हो सकता है। अनुशासन, एक महत्वपूर्ण शिक्षा उद्देश्य है, जो शरीर और वाचन को नियंत्रित करता है। बिना किसी अनुशासन के एक व्यक्ति शिल्प पर जो ज्ञान प्राप्त करता है वह समाज की भलाई के लिए नहीं है, लेकिन बौद्ध दृष्टिकोण यह है कि यह नैतिकता के साथ होना चाहिए। जो व्यक्ति सदाचार और अनुशासन से रहित है, उसकी बुद्धि निष्फल होती है। शिक्षा प्रक्रिया की मुख्य गतिविधियों से यह भी स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को समाज के अन्य सदस्यों का सम्मान करते हुए उन्हें जीवन का प्रशिक्षण देना है। बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य बचपन से ही विद्यार्थियों के साथ घनिष्ठ सम्बंध बनाकर और उन्हें एक फलदायी जीवन कैसे जीना है तथा उन्हें विभिन्न सामाजिक स्थितियों में मुख्य और अधीनस्थों के रूप में रखने वाले व्यक्ति को विकसित करना सिखाना है।

एक महत्वपूर्ण विषय जिसकी बौद्ध दर्शन अपेक्षा करता है, वह है उच्च आत्मविश्वास वाले व्यक्ति का निर्माण करना। बौद्ध धर्म के अनुसार, सबसे बड़ा आत्मविश्वासी व्यक्ति आठ सांसारिक परिस्थितियों का सामना करते हुए भी चिंता नहीं करता है। बौद्ध शिक्षा के उद्देश्यों के साथ आठ सांसारिक परिस्थितियों का सामना करना सिखाना हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना भी है।

अच्छे आचरण की जीवन शैली की पुष्टि करना बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य है। बौद्ध शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य व्यक्ति को स्वयं को और दूसरों को प्रेम और सम्मान के साथ देखने के लिए प्रशिक्षित करना है। निःस्वार्थ भाव से कार्य करने के लिए प्रेरित करना इसी उद्देश्य से किया जाता है। बौद्ध दर्शन की मुख्य आचार संहिता, पंचशील (पाँच उपदेश), मानव अधिकार की रक्षा का सिद्धांत है। बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति और समाज की भलाई या लाभ पैदा करना है।

### अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह अन्वेषण करना है कि क्या बौद्ध दर्शन के शैक्षिक सिद्धांत भारत की शिक्षा की उन्नति में कोई येागदान रखते हैं?

## अनुसंधान क्रियाविधि

प्रस्तुत शोध–पत्र शोधार्थी के शोध (पी–एच.डी.) कार्य के विषय वस्तु का ही एक भाग है जोकि बौद्ध दर्शन से सम्बन्धित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन की समीक्षा एवं विश्लेषण के आधार पर संकलित है। जिसमें भारत की शिक्षा में बौद्ध दर्शन की शिक्षाओं के योगदान का विवेचन एवं विश्लेषण करने के लिए ऐतिहासिक एवं दार्शनिक अनुसंधान विधियों का अनुसरण किया गया।

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

जब बौद्ध शिक्षा के दर्शन का संबंध है, तो संक्षेप में इतिहास की जांच करना आवश्यक है। पूर्व की शिक्षा अवधारणा से तात्पर्य अपेक्षाकृत पूर्व–बौद्ध है। भारतीय आर्य लोगों की शिक्षा की शुरुवात आर्य लोगों के भारत आने से पहले के समय से होती है। इंडो–आर्यन प्रवास के युग में रहने वाले स्वदेशी लोगों की शिक्षा मोहनजोदड़ो–हड़प्पा इंडो–वैली सभ्यता के प्रागैतिहासिक काल तक जाती है। बुद्ध के समय, भारत में फैली शिक्षा प्रणाली ब्राह्मण, पादरी समुदाय द्वारा स्वीकार की जाने वाली प्रणाली थी। यह मुख्य रूप से एक धार्मिक शिक्षा के रूप में माना जाता था।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार

*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*

जो लोग वेद के अध्ययन के लिए समर्पित थे, वे ब्राह्मण वंश या कुल के ब्राह्मण राजकुमार थे। शाही राजकुमारों के साथ–साथ कुलीन जाति के राजकुमारों ने सभी कलाओं और विज्ञानों (शिल्प) से संबंधित हथियार और शासन की कला सीखी। उनके अतिरिक्त, ऐसे लोग थे जिन्होंने विभिन्न कलाओं को अपने जीवन यापन के साधन या नौकरी के रूप में उपयोग किया था और यह माना जा सकता है कि उन कलाओं को शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया था। समनपाल सुत्त में कई कलाओं या विज्ञानों का उल्लेख किया गया है और उन विज्ञानों का उपयोग ब्राह्मणों और कुछ अन्य पादरी समुदाय द्वारा जीने के लिए किया गया था। उनमें से, मुख्य क्षेत्र अंग शास्त्र (विशेषता विज्ञान), निमित्त शास्त्र (साइन साइंस), स्वप्न शास्त्र (सपना विज्ञान), लक्षण शास्त्र (सौंदर्य विज्ञान), वास्तु विद्या (वास्तुकला) और शांति कम्मा (औपचारिक नृत्य या अनुष्ठान) अत्यादि थे। (निकिया और डेविड्स, 1995, पीपी. 47–86)।

यह ध्यातव्य है कि ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली के आधार पर, सामाजिक संस्थाओं से संबंधित अन्य सभी शैक्षणिक विषयों और ज्ञान का प्रसार हुआ। अतः यह स्पष्ट है कि ब्राह्मण शिक्षा से समाज को नैतिकता, तर्कशास्त्र, गणित, दर्शन, ज्योतिष आदि कला और विज्ञान विरासत में मिले हैं। इसलिए, यह स्पष्ट है कि ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली ने समय पर सामाजिक और व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने में मदद की। लेकिन, चूंकि ब्राह्मण एवं पादरी समुदाय, जिन्होंने समाज में शिक्षा प्रणाली का प्रसार किया, ने समाज के एक वर्ग को सामाजिक और मानवीय विशेषाधिकारों से वंचित करने के लिए नियम और कानून बनाए। शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य कुलीन परिवारों के बालकों को ही था। महिलाओं को भी उनके धार्मिक ग्रंथों से शिक्षा से वंचित किया गया था। महिलाओं को अशिक्षित और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने में असमर्थ माना जाता था।

## बौद्ध शिक्षा प्रणालीः दार्शनिक पृष्ठभूमि

महात्मा बुद्ध, वास्तव में, एक धार्मिक शिक्षक थे जिन्होंने दुनिया के लिए एक व्यावहारिक दर्शन प्रस्तुत किया जबकि उनका मुख्य उद्देश्य विश्व को एक शिक्षा प्रणाली प्रस्तुत करना नहीं था। उन्होंने अनुभव किया कि, दुनिया के लिए उनकी उत्पत्ति के समय, दुनिया और व्यक्ति के बारे में दर्शन जो भारत में प्रचलित था, वह असंगत था जो अशुद्धियों से भरा था। उन्होंने इसे निम्न प्रकार से कहा है। "पुराने दिनों में मगदाबी में धार्मिक शिक्षकों ने अशुद्धता के साथ एक सिद्धांत की उत्पत्ति की थी (नेतानंद, 1973, पृष्ठ। 168)।" चूँकि बुद्ध पूरी तरह से प्रबुद्ध (सम्मा संबुद्ध) हैं, वास्तविकता की उस गहरी समझ के कारण उनमें एक दृढ़ आत्मविश्वास था, उन्होंने माना था कि एक व्यावहारिक और एक जीवित दर्शन का परिचय देना उनका सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य था। संपूर्ण मानव समुदाय (नेतानंद, 1973, पृष्ठ 171)। अतः महात्मा बुद्ध ने अपने विचारों को शिक्षा के रूप में व्यक्त किया। इस शिक्षा में समाज के सभी व्यक्तियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी मान गया। इनके बताये गये मार्ग का अनुसरण करते हुए ही बौद्ध मठों एवं विहारों में शिक्षा के द्वार सभी व्यक्तियों स्त्री–पुरूष एवं प्रत्येक जाति वर्ण के लोगों के लिए खुले थे।

## बौद्ध शिक्षाः शिक्षा की संभावना

यह जांचना आवश्यक है कि क्या व्यक्तियों में शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता है या ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता है जिससे व्यक्ति और समाज को ज्ञान देकर लाभ देने के माध्यम के रूप में शिक्षा का उपयोग किया जा सके। बौद्ध दर्शन के अनुसार, शिक्षा की योग्यता स्वाभाविक रूप से व्यक्ति के पास होती है और शिक्षा के बारे में बौद्ध दृष्टिकोण शिक्षा के बौद्ध दर्शन से बना है। यह दर्शन कि व्यक्ति कारण–प्रभाव है और यह बौद्ध दर्शन बन रहा है, ऊपर समझाया गया है। कारण–प्रभाव सिद्धांत के तहत, व्यक्ति की प्रकृति के बारे में प्रस्तुत किए गए सभी निर्धारणों को बौद्ध धर्म द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है क्योंकि नियतत्ववाद व्यक्ति की गतिविधियों की जिम्मेदारी अन्य बाहरी ताकतों या शक्तियों को सौंपता है। जब व्यक्ति के पास अपने कार्यों की जिम्मेदारी नहीं होती है, तो उसके पास निर्णय लेने और उसके अनुसार कार्य करने का अवसर नहीं होता है। इस प्रकार, नियतिवाद के तहत व्यक्ति की

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार

*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*

शिक्षा योग्यता को अस्वीकार कर दिया जाता है। बौद्ध धर्म ने सभी प्रकार के नियतत्ववादों को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उनमें से, व्यक्ति की शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता और व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी व्यक्ति के साथ नहीं बल्कि बाहरी तत्व पर है।

## बौद्ध शिक्षाः शिक्षा पर परिभाषाएँ

बौद्ध धर्म में शिक्षा के बारे में परिभाषाओं को खोजने के लिए, पाली सिद्धांत (त्रि–पिटक) में पाई गई परिभाषाओं का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है। शिक्षा के लिए संस्कृत शब्द "अध्यापन" और पाली शब्द "अज्जुपन" है। पाली–अंग्रेज़ी कोश में 'अज्झपन' का अर्थ 'सलाह देने और शिक्षित करने' के रूप में दिया गया है (डेविड्स एंड स्टीड, 1966, पीपी. 11–12)। मोनियार विलियम का संस्कृत–अंग्रेजी शब्दकोश शिक्षा के लिए 'सलाह देना और शिक्षित करना' का अर्थ देता है। यह कहता है कि यह शब्द पहले 'आधि' के साथ क्रिया के रूप में है (विलियम्स, 1960, पृष्ठ 22)। इसके अनुसार, यह बहुत स्पष्ट है कि संस्कृत और पाली दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है। शबदकलपद्रुम, (विलियम्स, 1960, पृष्ठ 40) और वाकस्प्त्य (विलियम्स, 1960, पृष्ठ 140) शब्दकोशों में शिक्षा को 'शिक्षक से सीखने और किताबें पढ़ने का मौका देने' के रूप में समझाया गया है। 'शिक्षा' शब्द के मूल से विद्यार्थियों द्वारा शिक्षक के निर्देशन में की जाने वाली समस्त क्रियाओं का समावेश है। 'शिक्षा' शब्द का परीक्षण आवश्यक है। इसका अर्थ 'शिक्षक के शब्दों से सही क्रम में सीखना या सुनना और दिल से सीखना' यहाँ 'शिक्षा' शब्द के साथ है (विलियम्स, 1960, पृष्ठ 40)।

जब शिक्षा से सम्बंध का प्रश्न होता है, बौद्ध सिद्धांत में पाए जाने वाले 'सिक्ख' शब्द को ध्यान में रखा जाना चाहिए। पाली–सिंहली शब्दकोश में इसके कई अर्थ हैं जैसे 'अध्ययन, प्रशिक्षण और अनुशासन प्राप्त करना'। शिक्षा के अर्थ के साथ 'सिक्खी, सिखपाक और सिक्खपन' शब्दों का प्रयोग किया गया है (डेविड्स एंड स्टीड, 1966, पृष्ठ 708)। 'सिक्खी' शब्द के लिए 'अच्छे आचरण या सदाचार' और 'अनुशासनात्मक आचरण' का अर्थ भी शामिल है। 'सिक्खपद' शब्द से तात्पर्य यह है कि अनुशासन के नियम होते हैं। अनुशासन के लिए आचार संहिता के रूप में ये सिख आवश्यक हैं। सिख का अर्थ था 'अनुशासन का मार्ग'। ये गुण तब तक आवश्यक हैं जब तक व्यक्ति सभी दुखों को समाप्त करने और संतुष्टि प्राप्त करने के बाद मोक्ष (निर्वाण) प्राप्त नहीं कर लेता। अब यह स्पष्ट हो गया है कि शेखापदीपद का अर्थ इस आचार संहिता से है। ये सभी शिक्षा में शामिल हैं।

शिक्षा की परिभाषा में 'विनय' (अनुशासन) शब्द का विशेष स्थान है। विनय का अर्थ है अनुशासन, अशुद्धियों का उन्मूलन (किलेसा)। विनय शारीरिक और मानसिक अनुशासन है। इसमें पुण्य के बारे में आदेश है। तो, यह कहा जा सकता है कि पूरी बौद्ध शिक्षा विनय शब्द के साथ शामिल है। विल्सिन और हेवावितरण (1929) की टिप्पणी ने विनय को निम्नलिखित तरीके से समझाया है। 'चूंकि यह शारीरिक, मौखिक और मानसिक अनुशासन के लिए विभिन्न, विशेष, नियम प्रदान करता है, उन्हें विनय कहा जाता है।' यह स्पष्ट है कि बुद्ध ने 'विनय' शब्द से इरादा किया है कि यह वासना, दोष जैसी सभी मानसिक बीमारियों को समाप्त करने में मदद करता है। और अज्ञानता (पीली और हेवावितरण, 1950, पृ. 3)। इसके अनुसार, यह स्पष्ट है कि बौद्ध शिक्षा एक ऐसा तरीका है, जो संपूर्ण शारीरिक और मानसिक अनुशासन के माध्यम से आध्यात्मिक शुद्धता प्राप्त करने का एक तरीका हो सकता है।

## बौद्ध शिक्षाः चरित्र का विकास

इस बात पर ध्यान देने से पहले कि बौद्ध धर्म चरित्र के विकास पर आधारित है, यह महत्वपूर्ण है कि चरित्र के विकास का क्या अर्थ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, अधिकांश समय, किसी का चरित्र उसकी शारीरिक गतिविधियों को देखकर निर्धारित किया जाता है। लेकिन, यह कहना कि वह एक महान चरित्र है, न केवल उसकी तीन गुना गतिविधि यानी शारीरिक, मौखिक और मानसिक व्यवहार

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार
*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*

पैटर्न बल्कि समाज के संबंध में उसका अनुशासन भी है, और संस्कृति नरम होनी चाहिए। यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त सभी विशेषताओं वाला व्यक्ति अच्छे व्यवहार वाला एक अच्छा चरित्र है। कभी–कभी अच्छे शारीरिक आचरण वाले व्यक्ति की अन्य गतिविधियाँ बर्बाद हो सकती हैं। समाज के लिए लाभ और आशीर्वाद की उम्मीद करना संभव नहीं है। शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र के चरित्र की सभी चीजों को विकसित करके शिक्षा का उद्देश्य समाज के लिए एक अच्छे व्यक्ति का निर्माण करना है। अतः समाज की सेवा होनी चाहिए और यही बौद्ध शिक्षा की मुख्य अवधारणा है।

बौद्ध धर्म पहले व्यक्ति को शरीर, वाणी आदि अंगों को अनुशासित करके अच्छे आचरण की शिक्षा देता है, फिर उसके आध्यात्मिक विकास की सलाह देता है। 'शरीर में संयम अच्छा है; वाणी में संयम अच्छा है; अच्छा विचार में संयम है; संयम हर जगह अच्छा है (धम्मानंद और पीली, 1982, पृष्ठ 361)।' यह उपदेश स्पष्ट रूप से उपरोक्त तथ्य को बताता है। बौद्ध धर्म शरीर, वाणी और मन से किए गए सभी दुराचारों को अवगुण मानकर उन्हें त्यागने की सलाह देता है। "अट्ठा समी पानिधि" जैसी शिक्षाओं के माध्यम से चरित्र के विकास के लिए एक उच्च स्थान प्राप्त करना और समझाया है कि यह सांसारिक प्रगति और उससे आगे के लिए मदद करता है। शिक्षाविद, जो उच्च नैतिक आचरण वाले व्यक्ति की विशेषताओं का परिचय देते हैं, बताते हैं कि उनमें सक्रियता, निरंतर ऊर्जा, विश्वास, नेतृत्व, अनुशासन और करुणा जैसी विशेषताएं होनी चाहिए। उपरोक्त का बारीकी से विश्लेषण करते समय, यह ध्यान दिया जा सकता है कि प्रेम–कृपा (मेटा सुट्टा) पर प्रवचन में पाया गया शिक्षण "सक्कि उजिका सोजिका" यहाँ है। सक्कू का अर्थ है सक्रियता। अन्य आवश्यक मार्गदर्शन के लिए भी इस प्रवचन द्वारा ही प्रदान किया जाता है।

## बौद्ध शिक्षा के गुण

1. सुव्यवस्थित केन्द्र– बौद्ध शिक्षा सुसंगठित केन्द्रों में दी जाती थी। मठ और विहार जो इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त स्थान थे।
2. महानगरीय–बौद्ध शिक्षा सांप्रदायिक संकीर्णता से मुक्त थी।
3. सरल और तपस्वी–भिक्षुओं ने तपस्या और सादगी का जीवन व्यतीत किया।36
4. संपूर्ण विकास– बौद्ध शिक्षा ने छात्रों के शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर बहुत जोर दिया।
5. अनुशासित जीवन– शिक्षक और छात्र दोनों अनुशासित जीवन जीते हैं।
6. आदर्श छात्र शिक्षक संबंध।
7. अंतर्राष्ट्रीय महत्व– बौद्ध शिक्षा ने अंतर्राष्ट्रीय महत्व हासिल करने में मदद की, इसने भारत और दुनिया के अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को भी विकसित किया।

## बौद्ध शिक्षा के दोष

1. बौद्ध शिक्षा व्यवसायिक, औद्योगिक पर उचित ध्यान नहीं दे सकी और तकनीकी शिक्षा।
2. इसने सामाजिक विकास को गहरा आघात दिया क्योंकि इसने पारिवारिक संबंधों का उपहास उड़ाया। अपने पारिवारिक जीवन को छोड़कर बुद्ध भिक्षुओं ने अपना पूरा जीवन संघ और बौद्ध धर्म को समर्पित कर दिया।

## भारतीय शिक्षा के विकास में बौद्ध धर्म की भूमिका

भारत में बौद्ध धर्म के उदय के साथ, शिक्षा के कई केंद्र उभरे जो पहले मौजूद नहीं थे। बौद्ध भिक्षु जंगलों में ध्यान के जीवन का विकल्प चुन सकते थे, या शिक्षण भिक्षुओं की गतिविधियों के

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार

*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*

परिणामस्वरूप शिक्षण, उपदेश, धर्म का प्रचार करने का जीवन, सीखने की सीटों का उदय हुआ। मठवासी शिक्षा (पिरिवेनस) की ये सीटें धीरे–धीरे विकसित हुईं और उनमें से कुछ पूर्ण विश्वविद्यालय बन गईं। परिणामस्वरूप बौद्ध भारत में पाँच प्रमुख विश्वविद्यालय आए जिन्होंने व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त की। ये पांच थे– 1. नालंदा, 2. विक्रमशिला, 3. ओदंतपुरी, 4. जगदलाला और 5. सोमापुर।

नैतिकता और एक अच्छा जीवन जीने पर बुद्ध की शिक्षाओं का विस्तार सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी हुआ। वह कई मायनों में अपने समय से आगे था; सभी लोगों को समान मानते हुए उन्होंने जाति व्यवस्था को खारिज कर दिया और महिला शिक्षा को पूरी तरह से हतोत्साहित नहीं किया। उन्होंने सिखाया कि सरकारों की जिम्मेदारी है कि वे लोगों को नैतिकता सिखाने के लिए उदाहरण पेश करें और लोगों को समृद्ध बनने के अवसर प्रदान करके गरीबी को खत्म करें।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, बौद्ध शिक्षा ने वैदिक शिक्षा को पूरी तरह से बंद नहीं किया। बौद्ध शिक्षा का मुख्य सार वैदिक शिक्षा पर आधारित था जहाँ आध्यात्मिकता मुख्य फोकस थी। इससे अवैध शिक्षा और बौद्ध शिक्षा के बीच का अंतर मिट गया और यह भारत में शिक्षा का ऐतिहासिक विकास था।

## निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि बौद्ध दर्शन समाज और व्यक्ति के परिवर्तन को स्वीकार करता है। बौद्ध शिक्षा का प्रारंभिक और अंतिम उद्देश्य अपने मन एवं आचरण को शुद्ध करना है। शिक्षा के बौद्ध दर्शन का पालन करके जीवन में अंतिम लक्ष्य के रूप में मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। बौद्ध शिक्षा दर्शन समाज और व्यक्ति के परस्पर सम्बन्धों के सिद्धान्तों पर आधारित है। यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के बौद्ध दर्शन में व्यक्ति केंद्रीय बिंदु है। शिक्षा के बौद्ध दर्शन का मुख्य तत्व व्यक्ति को नैतिकता, एकाग्रता और ज्ञान जैसे कारकों के माध्यम से वास्तविक शिक्षा में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करना है। शिक्षा के बौद्ध दर्शन का अंतिम लक्ष्य आत्मा के लिए बलिदान करना और मुक्ति प्राप्त करना है।

इसलिए बौद्ध शिक्षा दर्शन ने भारतीय शिक्षा के विकास में एक प्रमुख भूमिका का निर्वहन किया है। यह बौद्ध शिक्षा दर्शन ही था जिसने तत्कालिक समाज में प्रचलित शिक्षा पर ब्राह्मणवाद के प्रभुत्व को पहली बार तोड़ा। बौद्ध दर्शन ही अन्य सभी जातियों को ब्राह्मणों के साथ समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने के लिए मुख्य धारा में लाया, इस प्रकार भारत में प्रचलित जाति व्यवस्था के कठिन बंधन को तोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को भी पूरी तरह से हतोत्साहित नहीं किया। उन्होंने अपने विहारों में भिक्षुणियों को प्रवेश दिया और इस प्रकार महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने घर से बाहर निकाला और उनके उत्थान के लिए काम किया। इसके अलावा यह बौद्ध दर्शन ही था जिसने शिक्षा के विकास और प्रसार के लिए विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों के निर्माण के साथ–साथ इसकी मदद से अपने धर्म का प्रचार किया। इन विश्वविद्यालयों की उच्च गुणवत्ता के कारण भारत विदेशी छात्रों के लिए सीखने का केंद्र बन गया। बौद्ध शिक्षा दर्शन ने कभी वैदिक शिक्षा की आलोचना नहीं की अपितु उसके साथ संतुलन बनाया इसने हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच एक मधुर संबंध बनाया।

## सन्दर्भः

1. माहेश्वरी, वी.के. (2012), भारत में बौद्ध काल में शिक्षा, शोध पत्र, मोरिया, ज़ेन 2012, बौद्ध फाउंडेशन ऑफ़ टीचिंग, रिसर्च पेपर।
2. हाजरा, के.एल. (2009), भारत में बौद्ध धर्मः एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, दिल्ली, बौद्ध विश्व प्रेस।
3. बख्शी, महाजन (2000), प्राचीन भारत में शिक्षा, दीप और दीप प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
4. सिंह, भानु प्रताप, (1990), भारत में शिक्षा के उद्देश्यः वैदिक, बौद्ध, मध्यकालीन, ब्रिस्टिश और

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार

*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*

उत्तर–इंडिपेंडेंस, दिल्ली, अजंता प्रकाशन।

5. बुद्धदत्त महाथेरा (1979), इंग्लिश–पाली डिक्शनरी, लंदन, यूकेः पाली टेक्स्ट सोसाइटी।
6. कोहेन, एल., और मैनियन, एल. (1994) शिक्षा में अनुसंधान के तरीके (चौथा संस्करण)। लंदन, यूकेः रूटलेज।
7. क्राउचर, पी. (1989) ऑस्ट्रेलिया में बौद्ध धर्म का इतिहास 1848–1998, केंसिंग्टन, ऑस्ट्रेलियाः छैं विश्व–विद्यालय का मुद्रणालय।
8. एरिकर, सी. (2009), ए बौद्ध अप्रोच टू अल्टरनेटिव स्कूलिंगः द धर्मा स्कूल, ब्राइटन, यूके इन पीए वुड्स और जी.जे. वुड्स (सं.) 21वीं सदी के लिए वैकल्पिक शिक्षाः दर्शन, दृष्टिकोण, दर्शन। एनवाई, यूएसएः पालग्रेव मैकमिलन, 83–100।
9. क्राफ्ट, के. (सं.) (1992) आंतरिक शांति, विश्व शांतिः बौद्ध धर्म और अहिंसा पर निबंध, अल्बानीः स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस।
10. मा रिया, जेड (2012), दिमागी शिक्षणः ऑस्ट्रेलिया में बौद्ध शिक्षा के लिए धर्म नींव रखना, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा जर्नलः तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य, 11(1), 35–51।
11. नयनतिलोक महाथेरा, (1988) बौद्ध शब्दकोशः बौद्ध नियमों और सिद्धांतों का एक मैनुअल, कैंडी, श्रीलंकाः चौथा संशोधित संस्करण, बौद्ध प्रकाशन सोसायटी।
12. सिल्वरमैन, डी. (2000) डूइंग क्वालिटेटिव रिसर्चः ए प्रैक्टिकल हैंडबुक। थाउजेंड ओक्स, सीएः सेज।
13. स्मिथ, एस. (2010) टू बी वाइज एंड काइंडः ए बौद्ध कम्युनिटी एंगेजमेंट विद विक्टोरियन स्टेट प्राइमरी स्कूल। अप्रकाशित डॉक्टरेट थीसिस, विक्टोरिया विश्वविद्यालय।
14. स्मिथ, एस और सीह, एस (2008), बुद्ध की खोजः प्राथमिक विद्यालय के लिए पाठ, मेलबर्न, विक्टोरियाः बौद्ध परिषद विक्टोरिया।
15. स्ट्रॉस, ए. और कॉर्बिन, जे. (1990) बेसिक्स ऑफ क्वालिटेटिव रिसर्चः ग्राउंडेड थ्योरी प्रोसीजर एंड टेक्निक्स। न्यूबरी पार्क, कैलिफ़ोर्निया, यूएसएः सेज प्रकाशन।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

*Corresponding author*: सरिता कुमारी डा0 संजीव कुमार

*Submitted: 27 July 2022, Revised: 09 August 2022, Accepted: 18 August 2022, Published: October 2022*